"कलम को कमल समान बनाओ "

कलम को कमल समान बनाया जाये तो मानव संस्कृति और समूचे विश्व का परिवर्तन हो सकता है। अपने विचारों में तथा सृजनों में परिवर्तन कर लेखक, कलाकार बेहतर विश्व के निर्माण में अपना योगदान कर सकते हैं और सुन्दर ढंग से धर्म की ओर ईशारा कर सकते हैं। लेखक या कलाकार की यात्रा एक अनुसंधान की यात्रा है। वह शब्दों द्वारा अपने अनुभवों की तथा संवदेनाओं की अभिव्यक्ति करता है। लेखक तो बाँसुरी के समान है, वह जन-जन की भावनाओं को बजाता है। लेखक अपनी कलम द्वारा इस दु:ख और अशान्त संसार में, सहज राजयोग के अभ्यास द्वारा, युवा वर्ग ही नहीं सभी वर्गों के लोगों में आध्यात्मिक जागृति पैदा करके, उनकी मादक आदतों को खत्म करके, उनके दिव्य संस्कारों का बीजारोपण कर सकता है। अकेला व्यक्ति कोई भी रचनात्मक कार्य नहीं कर सकता उसको संगठन की आवश्यकता होती है और एक संगठन द्वारा वह बड़े से बड़े कार्य को सरल तरीके से कर सकता है। यदि लेखक या कलाकार अपनी कलम को कमल समान पवित्र व निष्पक्ष बनाकर आध्यात्मिकता की ओर लेखन करें तो राजनेता, प्रशासक व समाज सेवियों में सहज त्याग, तपस्या, सेवा की भावना जागृत कर सकता है। आज इतनी समाज सुधार संस्थाओं के होते हुए भी समाज सुधार नहीं होने का मूल कारण, समाज सेवा करने वालों में आध्यात्मिकता व नैतिकता की कमी है।

एक तरफ हिंसक ताकतें अपना कार्य कर रही हैं। मनोरंजन के अंर्तगत रेडियो, दूरदर्शन व डिस्क द्वारा अनेक चैनलों के माध्यम से गंदे व अश्लील प्रसारणों से बच्चों के चरित्र पर निरन्तर बुरा असर पड़ रहा है। लेखक या कलाकार अपनी कलम द्वारा, उनका विरोध कर सकता है, क्योंकि तलवार से अधिक शक्तिशाली कलम होती है। वह अपनी दृढ़ प्रतिज्ञा द्वारा समाज में फैली बिमारियाँ, जो समाज को अग्नि के समान जला रही हैं मिटाकर उनको हटाकर आध्यात्मिकता का प्रसार-प्रचार कर सकता है सर्व के सहयोग से इस अशान्त दु:खी विश्व को सुखमय संसार बना सकता है।

चारित्रिक गरीबी दूर करना ही हमारा नैतिक एवं सामाजिक दायित्व है -

वर्तमान समय की अनेक मुख्य समस्याओं का हल चरित्र उत्थान है। चरित्र श्रेष्ठ हो जायेगा, तो समाज कारण अधिक गरब है। चारित्रिक गरीबी को दूर करना ही हमारा नैतिक व सामाजिक दायित्व है। कलम द्वारा २१वीं सदी हेतु समाज के पुर्न निर्माण की आवश्यकता है। परिस्थितियाँ आयेंगी, समय और नाजूक होगा, परन्तु समाज के पुर्नउत्थान हेतु हमें कमजोरियों को छोड़कर नैतिकता और अन्तरिक बल बढ़ाना होगा। यह कार्य लेखक द्वारा सहज हो सकता है। विचारों को बदलकर, हमें पर्यावरण ठीक करना है और यह अर्न्तदर्शन करना है, कि हम विकास की ओर जा रहे हैं या विनाश की ओर।

नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना द्वारा ही समाज श्रेष्ठ और शक्तिशाली बनेगा-

व्यक्ति में बुराईयों की समझ तो है, परन्तु उन्हें छोड़ने की शक्ति नहीं है। आज हर क्षेत्र में समाज के गिरते स्तर और अनेक समस्याओं का कारण विचारो में गिरावट और नकारात्मक चिंतन है, इसलिए वर्तमान समय आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा लोगों की विचारधारा को श्रेष्ठ बनाना जरूरी है। नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना से ही समाज श्रेष्ठ और शक्तिशाली बनेगा।

शान्ति,सद्भावना और सच्ची सेवा से ही सुखमय समाज बनेगा - आज व्यक्ति की धारणा यह बन गई है कि समाज में अपने अस्तित्व के लिये पावर, पापुलरटी, प्रेस्टिज (शक्ति, प्रसिद्ध व सम्मानीय पद) आवश्यक है, परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि शान्ति, सद्भावना और सच्ची सेवा की वृत्ति, सामाजिक सह- अस्तित्व के लिए उससे कहीं अधिक आवश्यक है।इनके द्वारा ही सुखमय समाज बनेगा। हम चिंतन करें, कि हम समाज से जुड़ रहे हैं या कट रहे हैं, नैतिक उत्थान में रत हैं या गिरावट में, सहयोगी हैं या असहयोगी, प्रसन्न हैं या ईर्ष्यालु, इन प्रश्नों के सकारात्मक उत्तर से ही हम वसुधैव कुटुम्बकम की धारा समाज में बहा सकते हैं।

विश्व को सुखमय बनाने के लिये वचनबद्धता और जिम्मेवारी की भावना जरूरी- वचनबद्धता, ईमानदारी और जिम्मेवारी की भावना द्वारा ही समाज की सच्ची सेवा की जा सकती है, सुखमय संसार के निर्माण के लिए ये बातें जरूरी हैं, की समाज के परिवर्तन के लिये नैतिक मूल्यों की आवश्यकता हैं, समस्या और तनाव से घिरे समाज का परिवर्तन सब चाहते हैं, परन्तु नैतिक मूल्यों के अभाव में लोगों में परिवर्तन शक्ति नहीं है, व्यर्थ बातों और संग में व्यक्ति समय गँवा रहा है, श्रेष्ठ संग का सर्वथा अभाव है, संग का ही रंग लगता है। श्रेष्ठ संग से व्यक्ति परिवर्तन और व्यक्ति परिवर्तन से समाज और विश्व का परिवर्तन होगा। गाँधी जैसा दर्शन और व्यक्तित्व तो सिर्फ गाँधी जी में ही था , गाँधी जी ने कहा कि लगन, मेहनत, जिम्मेवारी, अनुशासन और आत्मिक भावना से ही कार्य करने पर भगवान की दुआयें प्राप्त होती हैं। समाज को परिवर्तन करने की यही शक्ति है। हम अपने दायित्वों को स्वीकारें तभी हम समस्याओं का हल करके समाज को ऊपर उठा सकेंगे।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com